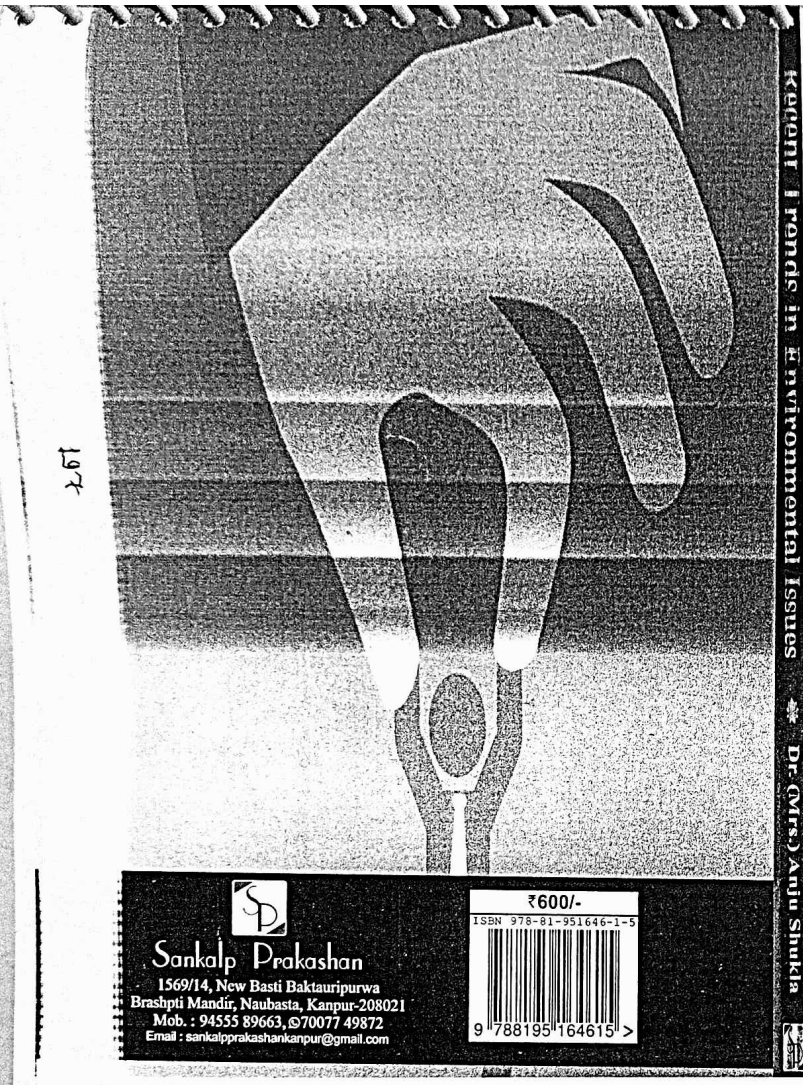

Sankalp Prakashan
1569/14, New Basti Baktauripurwa
Brashpti Mandir, Naubasta, Kanpur-208021
Mob. : 94555 89663, 70077 49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

₹600/-
ISBN 978-81-951646-1-5
9 788195 164615

Recent Trends in Environmental Issues * Dr. (Mrs.) Anju Shukla

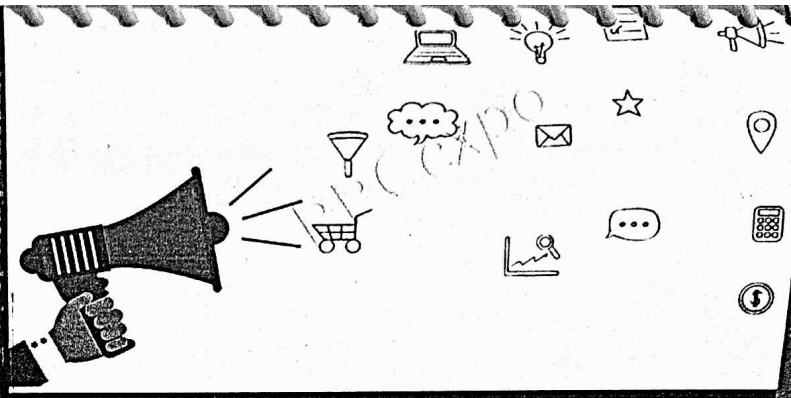

Recent Trends in Environmental Issues

Dr. (Mrs.) Anju Shukla

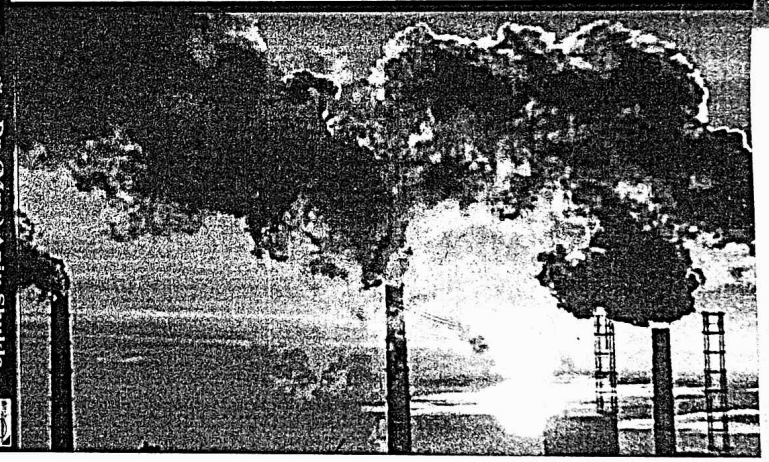

ISBN : 978-81-951646-1-5
Price : 600/-

Book Name:
Recent Trends in Environmental Issues
Edited by :
Dr. (Mrs.) Anju Shukla

© Reserved
First Published : 2021

Typesetting :
Rudra Graphics

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers]

Published by
SANKALP PRAKASHAN
569/14, New Basti, Baktauri Purwa,
Rashpati Mandir, Naubasta, Kanpur-208021
Mob. : 94555 89663, 70077 49872
Email - sankapprakashankanpur@gmail.com

PRINTED IN INDIA
Printed at Aryan Digital, Delhi.

सहयोगी संपादक
डॉ. एम.एल. जायसवाल
डॉ. विवेक अम्बलकर
डॉ. मनीष तिवारी
डॉ. शिखा पहारे
प्रो. तोषिमा मिश्रा
प्रो. श्रीती सोमवंशी

WEL COME NOTES BY ORGANISING SECRETARY

Environment safety and make it green is the urgent need of today. All we need to maintain its neutrality as we have destroyed it with a greater speed. The misbalancing of the natural cycle of our environment is leading towards the distraction of life from the planet. Now, it has become a global issue of every country to think about this situation on greater value to maintained make it farther possibility of life on earth for this we should work as a team to make our environment clean. in short save the nature for the sake of future.

Saving the environment will only save the future generations. This slogan has to be inculcate in every human being. It's time to aware people about the benefits of clean and green environment. There are so many global issues on environment. Pollution, Deforestation, save water, plastic management etc. we should try to understand that resources are not free they charge all a few. So try to conserve what our children deserve Prior to the period of industrialization, the environment was in pretty good shape. However due to industrialization and rapid urbanization there has been massive exploitation of natural resources. further causing harm to the soil due to the heavy use of pesticides in agriculture leading to the deteriorating quality of soil and barren lands.

Single use plastics or disposable plastics are used only once before they are thrown away or recycled. These items are things like plastic bags straws, coffee stirrers , soda and water bottles and most food packaging we produce hundreds of millions of tons of plastic every year, most of which can not be recycled. It's obvious that we need to use less plastic, move towards environmentally sustainable products and services and come up with technology that recycles plastics more efficiently.

I am glad that our delegates' scientists researchers scholars Academicians and student as well as the participants of this National seminar 2019-20 are all here to discuss about this biggest global issues together. Yes it is the truth that "unity can bring a great change" And if our youth unite, then definitely there will be change. All we need is to focus on the problems by becoming the part of it. Try to solve it do it making others also aware of it guiding youngsters about the merits/demerits of it giving educations in schools, Colleges.

Dr. Vivek M. Ambalkar
M.Sc. , M.Phil, Ph.D.
Head, Department of Physics

Content

1. भारतीय समाज एवं संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता
   डॉ. अंजू शुक्ला 15
2. श्रीरामचरितमानस में पर्यावरण चिंतन
   डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार वाजपेयी 23
3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में पर्यावरण संचेतना
   डॉ. संदीप कुमार त्रिपाठी, डॉ. समीक्षा शुक्ला 34
4. भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में पर्यावरणीय चिन्ताएं
   डॉ. राहुल शुक्ला, डॉ. अरुण कुमार, सुधीर कुमार 39
5. पारिस्थितिकीय तंत्र की संकल्पना
   डॉ. अजय कुमार यादव 50
6. पर्यावरण: प्राकृतिक सम्पदा की भूमिका
   डॉ. तुकाराम वैद्यनाथ चाटे 62
7. पर्यावरण मानव दायित्व – सतत् विकास का लक्ष्य
   डॉ. (सुश्री) भावना कमाने 67
8. पर्यावरण का बदलाव : ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव
   डॉ. शेख़ शहेनाज़ अहेमद 72
9. पर्यावरण और औद्योगीकरण का प्रभाव
   डॉ. हरिणी रानी आगर, डॉ. एम.आर. आगर 77
10. जल संरक्षण के उपाय
    डॉ. शशि गुप्ता 82
11. पर्यावरण प्रदूषण
    प्रो. श्रीमती किरण दुबे, डॉ. एम.एस. तम्बोली 90
12. Physico-Chemical Studies of Ponds Water of Bilaspur City (India)
    Dr. M. L. Jaiswal, Mr. Moti Lal Patle 98

8

पर्यावरण का बदलाव : ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव

डॉ. शेख़ शहेनाज़ अहेमद

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम की जड़ें बहुत गहरी हैं, जिन्हें हम बराबर सींचते आए हैं। हमने धरती को 'माता' कह कर सम्बोधित किया और जीवनदायिनी नदियों को भी 'माँ' के ही समतुल्य माना। इसके पीछे धारणा यही थी कि हम इनका संरक्षण करें, ताकि ये मानव जीवन को सुखमय बनाएं। हमने बहुत पहले इस मर्म को समझ लिया था कि मानव जीवन को बनाए रखने के लिए प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित और समृद्ध बनाए रखना नितांत आवश्यक है और इन्हें क्षति पहुंचाकर सुखद मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि हम सदैव प्रकृति के प्रति आस्थानत रहे और उससे ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त करते रहे। जीवन के हर पहलू में प्रकृति के महत्व को सर्वोपरि रखा। यहां तक कि कर्मकांडों तक में इसकी उपेक्षा नहीं की, बल्कि इसे प्रमुखता दी। जन्म से मरण तक हम प्रकृति और पर्यावरण को साथ लेकर चले।

पहले हमारे यहां यह विधान था कि जब किसी व्यक्ति की इहलीला समाप्त हो जाती थी, तो जिस स्थान पर उसकी चिता जलाई जाती थी, उसके चारों कोनों पर मरने वाले के परिजन चार वृक्ष लगाते थे इतना ही नहीं वर्ष पर्यन्त इन पेड़ों की देख–भाल भी परिजन करते थे और इन्हें दूध व जल से सींचते थे। ऐसा विधान किसी अन्य देश में शायद ही हो। हालांकि समय ही आपाधापी, स्थानाभाव एवं जीवन–शैली में आए बदलावों के कारण यह पुरानी परंपरा अब लुप्तप्राय है और अब टहनियां गाड़ कर इस विधान को सांकेतिक रूप से पूरा किया जाता है। हालांकि आज ऐसी परंपराओं को पुनर्जीवित किए जाने की सख्त जरूरत है, ताकि धरती हरी–भरी रहे। हमें सबसे पहले ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए प्रयास करने होंगे। दुख इस बात का है कि इस समस्या से उबरने के लिए वैश्विक मंचों पर बहसें तो खूब होती हैं, किन्तु कोई व्यावहारिक पहल नहीं होती। ये मंच राजनीतिक प्रपंच के अड्डे बन गये हैं।

यही कारण है कि कोई कारगर वैश्विक पहल होती नहीं दिख रही है। समाधान के लिए यह सूरत बदलनी होगी। विश्व में ग्रीन हाउस गैसों के शीर्ष उत्सर्जक चीन, अमेरिका, यूरोपीय संघ, इंडोनेशिया तथा भारत हैं। चीन जहां पहले पायदान पर है, वहीं भारत पाँचवें पर। इन देशों को विशेषरूप से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा तथा कुदरत के कहर से बचाव के लिए अपने दायित्वों को निभाना होगा। इस दिशा में कारगर पहल तथा वृक्षारोपण को बढ़ाया जाए। उत्सर्जन में जो देश आगे हैं, उनकी निगरानी की जाए तथा समय–समय पर इसकी समीक्षा की जाए कि इसमें कितनी गिरावट आई है।

ऐसी तकनीकें विकसित की जाएं, जिनसे कार्बन का उत्सर्जन कम हो तथा इन्हें अधिक से अधिक अमल में लाने के लिए विश्व के सभी देशों को प्रोत्साहित किया जाए। वैश्विक पहल को मजबूती देने के लिए विकासशील देशों का यह दायित्व बनता है कि एक संयुक्त राष्ट्र जलवायु कोष का गठन करें, ताकि इस वैश्विक समस्या से निपटने के लिए धन की कमी न आड़े आये। बायो गैस और सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को भी बढ़ावा देकर इस समस्या से निपटा जा सकता है। इन छोटे–छोटे उपायों को अपनाने के साथ ही यह भी जरूरी है कि हम वृक्षारोपण पर अधिकाधिक ध्यान दें तथा इसके लिए लोगों को प्रेरित भी करें। सिर्फ वृक्षारोपण को प्रोत्साहित ही न करें, बल्कि वनों की कटान, वृक्षों की कटान का पुरजोर विरोध भी करें। पेड़ों को अपनी संतान की तरह प्यार और परवरिश देकर हमें देश में वृक्ष क्रांति लानी होगी।

हर व्यक्ति जीवन में यदि मात्र एक पेड़ लगाने और अपने जीवनकाल में उसकी देखभाल का संकल्प ले, तो सूरत काफी बदल सकती है। हमारे देश में वृक्षों के पोषण और पल्लवन की एक समृद्ध परंपरा रहीं है। हमारे यहां वृक्षों को पूजनीय माना जाता है। लोक पर्वो पर वृक्ष पूजन की परंपरा भी है, इसके बावजूद वनाच्छादित क्षेत्र में कमी यह इंगित करती है कि कहीं न कही हम उन दायित्वों से पीछे हटे हैं, जो पर्यावरण के संरक्षण के लिए आवश्यक हैं। संभवतः इसके लिए वह असंतुलित विकास ही जिम्मेदार है, जो प्रकृति की उपेक्षा और उसका दोहन कर किया गया।

वस्तुतः विकास के मुद्दे पर अनेक दृष्टिकोण एवं मत देखने में आते हैं। विकास के अधिक प्रबल सिद्धांत जो कि शीर्ष तल एवं उद्योगन्मुखी हैं, आलोचना का शिकार रहे हैं व उनके विकल्प भी सुझाए जाते रहे हैं। अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हुए धरती के संसाधन शोषण एवं भारी उद्योगों द्वारा पर्यावरण ह्रास संबंधी बढ़ी जागरूकता के वर्तमान युग में विकास के उपभोक्तावादोन्मुखी दृष्टिकोणों की कड़ी आलोचना हो रहीं है। अब हमारा दायित्व बनता है कि हम आलोचनाओं तक ही सीमित न रहें, बल्कि अच्छे

रेणामों के लिए व्यावहारिक पहल के धरातल पर खड़े होकर प्रकृति और र्यावरण में ईश्वर का प्रतिरूप देखकर उसकी उपासना करें। संभवतः तभी दूर सकेगा प्रकृति का कोप और हम उन प्राकृतिक आपदाओं से बच सकेंगे, जो :-रह कर हमे झकझोर रही है।

पर्यावरण के प्रति मानव समाज के चिन्तन एवं जागरुकता के कारण वर्ष 992 में दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन रियो डि जेनेरियो में हुआ, स सम्मेलन को अर्थ सम्मिट के नाम से भी जाना जाता है। इसमें 150 से भी धिक देशो ने भाग लिया। इस सम्मेलन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथा भप्रद सिद्धांत पर आम सहमति हुयी कि शान्ति विकास और पर्यावरणीय रक्षा एक दूसरे पर आश्रित हैं, इसमे से किसी को भी स्वतंत्र रूप से देखता म्भव नही है। यह सहमति अपने आप में एक बहुत बडी उपलब्धि है। इस म्मेलन के परिणामस्वरूप रियो नाम से एक 26 सिद्धांतो वाला दस्तावेज नाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व का संयमित एवं संतुलित विकास हालाकि इन सिद्धांतो को अपनाने मे अपना हित समझा है तथा अपने राष्ट्रीय त्त्व के कार्यक्रमो मे इसे एक प्रमुख स्थान दिया है।

विश्वव्यापी ताप वृद्धि का विश्व स्तर पर सामना करने हेतु 141 देशों के च हुआ क्योटो समझौता 16 फरवरी,2005 से लागू हो गया। ज्ञातव्य है कि गेटो में विश्व जलवायु परिवर्तन पर 1 से 11 दिसम्बर, 1997 तक एक म्मेलन आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन के समापन पर जारी घोषणा–पत्र र्थात् "क्योटो प्रोटोकॉल" में छह गैसो (ब्व्2ए छ2वए ब्भ्4ए भ्थ्ब्ए च्थ्ब्"थ्6ए) के त्सर्जन मे 1990 के स्तर पर 5.2 प्रतिशत कटौती करने पर अमेरिका सहित विकसित देशो द्वारा प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।

तापवृद्धि के निवारक उपाय – विभिन्न संधियों मे उल्लिखित शर्तो का भी हस्ताक्षरकर्ता देशो द्वारा कड़ाई से अनुपालन तापवृद्धि को रोकने में काफी हायक साबित हो सकता है। किन्तु इसके अतिरिक्त कई अन्य निवारक पाय है जो किए जा सकते है। विभिन्न देशों की सरकारों को इन उपायों को श की नीतियों मे शामिल करना चाहिए ताकि इनका स्तर पर अनुपाललन को के। कुछ निवाय इस प्रकार है–

वृक्षारोपण– वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण द्वारा वैश्विक ताप वृद्धि पर काफी द तक नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। वृक्ष कार्बन डाइ ऑक्साइड के प्रमुख पभोक्ता है। वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार 120 मिलियन हेक्टेयर का वन क्षेत्र तिवर्ष 780 मिलियन टन कार्बन डाइ ऑक्साइड का अवशोषण कर सकता है। सका सीधा सा आशय है कि यदि पृथ्वी की सतह में वनाच्छादित क्षेत्रों की वृद्धि र दी जाय तो मानवीय क्रिया कलाप द्वारा उत्सर्जित कार्बन डाईऑक्साइड गैस ी बड़ी मात्रा को प्राकृतिक रूप से समाप्त किया जा सकता है

बायो गैस के उपयोग का विस्तार– विकासशील देशों तथा अल्पविकसित देशों में प्रायःखाना बनाने तथा अन्य कार्यों के लिए लकड़ी, गोबर के उपले इत्यादि का उपयोग किया जाता है। बायोगैस को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सौर ऊर्जा– जीवाश्म ईधन के प्रयोग की अपेक्षा सौर ऊर्जा का उपयोग पर्यावरण की दृष्टि से अधिक लाभकारी हैं। सूर्य एक अक्षर ऊर्जा भंडार है। विभिन्न देशों को चाहिए कि वे अपने देश में सौर ऊर्जा के उपायोग को प्रोत्साहित दे। इसका जैसे–जैसे विस्तार होगा जीवाश्म ईधन उपयोग घटेगा।

भारत की स्थिति– वैश्विक ताप वृद्धि पर अंतर्राष्ट्रीय चिंता में शामिल भारत ने 1992 में मांट्रियल प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किया था। 1998 में देश के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा ओजोन नष्ट कारक पदार्थ अधिनियम, 1998 बनाया गया। इस अधिनियम के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है–

(1) ओजोन नष्ट कारक पदार्थों के उत्पादन, निर्यात, आयात हेतु पर्यावरण मंत्रालय से लाइसेंस आवश्यक

(2) ओजोन नष्ट कारक पदार्थों के उत्पादन संबंधी प्रकियाओं को समाप्त करने हेतु समय सीमा तय की गयी।

भूमण्डलीय तापन के विस्तार पर लगाम कसने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम वायुमण्डल में हानिकारक गैसों के सांद्रण को कम किया जाय। हानिकारक गैसों के उत्सर्जन की मात्रा को कम करने के प्रश्न पर विकसित देशों के मध्य एक द्वन्द्व की स्थिति बनी हुई है। यह तय है कि औद्योगीकीकरण का कार्य विकसित देशों में तीव्रता से हुआ है। इस प्रकार से उनकी जिम्मेदारी भी अधिक बनती है। प्रायः पिछले सभी सम्मेलनों और बैठकों में विकसित देशों ने इस जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करते हुए विकासशील देशों को ही दोषी ठहराने का कार्य किया है। यह वास्तव में निंदनीय है। आज सभी देशों को अपने निजी हितों को त्याग कर वैश्विक हित पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। गर्म होती धरती को बचाने के लिए यदि हमने ठोस उपाय न किए तो यह संपूर्ण पृथ्वी के लिए घातक कोगा।

भारत क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर के साथ–साथ इसकी पुष्टि भी कर चुका है। उल्लेखनीय है कि पुष्टि के बाद भी भारत पर किसी तरह की प्रतिबद्धता नहीं है और उसे ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन से किसी प्रकार की कटौती नहीं करनी है। क्योंकि वह विकसित देशों की सूची में नहीं है। क्योटों प्रोटोकॉल की पुष्टि से भारत को कई फायदे है। इससे भारत में पुनर्नवीनीकरण ऊर्जा, ऊर्जा उत्पादन तथा वनीयकरण योजना में लिवेश होगा। इसके अलावा क्योटो प्रोटोकॉल से भारत को संतुलित विकास को मद्देनजर रखते हुए स्वच्छ प्रौद्योगिकी परियोजनाओं हेतु बाहरी सहायता भी प्राप्त हो सकेगी।

संदर्भ

नई सहस्त्राब्दी : आज के प्रश्न और संभावित समाधान, हरिकृष्ण निगम, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000

पर्यावरण और जीव – प्रेमानंद चंदोला, हिमांचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 1990

पर्यावरण की पुकार – वेदप्रकाश दुबे, मगध प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990

उत्तर आधुनिकतावाद और उत्तर संरचनावाद– सुधीश पचौरी हिमांचल पुस्तक भण्डार , दिल्ली 1994

पर्यावरण प्रदूषण और हम, सुजाता विष्ट , तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989

आधुनिक पर्यावरण समस्या, : वैदिक समाधान, संपादक स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, वैदिक शोधा संस्थान गुरूकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, द्वितीय संस्करण 2000

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी–विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर, जिला– नांदेड (महाराष्ट्र)